Dr. RAMENDRA KUMAR SINGH-2
Dept. of Psychology
M.B.R.R.V. Pt. Singh College, Ara
U.G. SEM-IV (MJC-6)

MEANING, NATURE, SCOPE, AIMS & RELEVANCE OF EDUCATIONAL PSYCHOLOGY
शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, स्वरूप, क्षेत्र, लक्ष्य एवं प्रासंगिता (उपादेयता)

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक प्रयुक्त शाखा (Applied branch) है जिसके अन्तर्गत शिक्षा से संबंधित समस्याओं का विवेचन, विश्लेषण एवं वैज्ञानिक समाधान का अध्ययन किया जाता है। यानी शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध शैक्षिक प्रक्रियाओं एवं समस्याओं के अध्ययन से है। दूसरे शब्दों में अगर कहा जाय तो शिक्षा मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं प्रविधियों द्वारा शैक्षिक समस्याओं का उल में अनुप्रयोग किया जाता है। जहाँ तक इसके अर्थ एवं स्वरूप की बात है तो विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र पर प्रकाश डालने के लिए अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया जिनमें से कुछ प्रमुख परिभाषाओं का जिक्र करना उपयुक्त प्रतीत होगा है —

स्किनर (1962) ने शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है। —

Educational Psychology is the branch of Psychology which deals with teaching & learning." अर्थात शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो सीखने और सीखाने की प्रक्रिया का अध्ययन करता है।"

जेम्स ड्रेवर (1964) के अनुसार —

Scanned with OKEN Scanner

"शिक्षा मनोविज्ञान प्रयुक्त मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो शिक्षा में मनोविज्ञान के नियमों एवं परिणामों के उपयोग से तथा साथ-ही साथ शिक्षा के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से संबद्ध है।"

इसी प्रकार सैन्ट्रोक (Santrock 2006) ने इसकी परिभाषा निम्न प्रकार दी है —

"Educational Psychology is the branch of Psychology that specializes in understanding teaching, learning in the educational settings." अर्थात् शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक ऐसी शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण एवं अधिगम के बोध में भिन्नता को दिखाता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ एवं स्वरूप पर बहुत हद तक प्रकाश पड़ जाता है जिसे हम निम्न प्रकार से उल्लेख कर सकते हैं —

(i) शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक प्रयुक्त शाखा है। इसका तात्पर्य यह है कि मनोविज्ञान की इस शाखा द्वारा मनोवैज्ञानिक नियमों, सिद्धान्तों एवं तथ्यों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में करके बालकों के एवं व्यवस्कों के सर्वांगीण विकास करने के मार्ग प्रशस्त किया जाता है।

(ii) इसके द्वारा बालकों की क्षमताओं का आकलन कर समुचित शिक्षा व्यवस्था करने में सहायता पहुँचाया जाता है।

(iii) शिक्षा मनोविज्ञान बालकों की मानसिक, शारीरिक एवं नैतिक क्षमताओं/योग्यताओं को निर्धारित करके तदनुसार परामर्श भी देता है ताकि मनोवैज्ञानिक नियमों का प्रयोग कर उनका सर्वांगीण विकास में मदद मिल सके।

(iv) इसके तहत सीखने एवं सीखाने की प्रक्रियाओं का भी अध्ययन किया जाता है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट

हो जाता है कि शिक्षा मनोविज्ञान वास्तव में शिक्षा में मनोविज्ञान की उपयोगिता का विज्ञान है जो शिक्षा से संबंधित समस्याओं का समाधान और उचित शैक्षिक माहौल तैयार करने में मदद करता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि "शिक्षा मनोविज्ञान की वह प्रयुक्त शाखा है जो शिक्षा की समस्याओं का विवेचन, विश्लेषण एवं समाधान करता है।"

शिक्षा मनोविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास
Brief History of Educational Psy

शिक्षा ज्ञानार्जन की एक प्राचीन प्रक्रिया है। पहले लोग गुरुजनों अथवा दार्शनिकों, चिंतकों से ग्रहण करते थे। ग्रीक दार्शनिक Democritus (डेमोक्रेटस) ने सर्वप्रथम बच्चों के समुचित व्यक्तित्व विकास में घरेलू शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। प्लेटो, अरस्तु 400 B.C आदि के ग्रंथों में इसका जिक्र मिलता है। आगे चलकर जॉन लॉक (1632-1704) आदि ने अपने विचार से शिक्षा पर प्रकाश डाला जिससे आगे चलकर Theory of formal Education के क्षेत्र में विस्तार हुआ।

वस्तुतः अनेक दार्शनिकों के विचार एवं चिंतन ने शिक्षा मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। इसी कड़ी में आगे चलकर Sri Francis Galton (1822-1911) (1880) के द्वारा किये गए अभूतपूर्व योगदान से शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म (1880) ई० से प्रारंभ होता है। यहाँ से वैयक्तिक भिन्नता के अध्ययन पर बल दिया जाने लगा और मानसिक क्षमता का मापन होने लगा जो शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक तरह का क्रान्तिकारी कदम था। इसी क्रम में जी० एस० हॉल, विलियम जेम्स, बिने, जे० एम० कैटेल आदि ने अपने शोधों के आधार पर नई दिशा दी। कैटेल के शिष्य E.L. Thorndike ने इस कार्य को और आगे बढ़ाया और अपने सीखने के नियम Law of effect द्वारा अमूल्य योगदान दिया। थार्नडाइक ने (1903) में Education Psychology की प्रसिद्ध पुस्तक का प्रतिपादन कर डाला और CAVD test का आविष्कार कर डाला। इस तरह यहाँ से शिक्षा मनोविज्ञान के वैज्ञानिक-काल का प्रारंभ हो जाता है। Skinner ने (1950) में Programmed Learning के संप्रत्यय का प्रतिपादन किया। इस प्रकार शिक्षा

Scanned with OKEN Scanner

मनोविज्ञान का क्रमिक रूप से विकास होता रहा और वह वर्तमान रूप को अख्तियार किया।

शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य
AIMS OR OBJECTIVES OF EDUCATIONAL PSYCHOLOGY

शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना तथा मानव स्वभाव को समझने में मदद करना है। शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, जो जीवनपर्यन्त चलती रहती है। इसी संदर्भ में Dewey ने कहा है कि शिक्षा द्वारा व्यवहार का परिष्कार अथवा परिमार्जन होता है।

शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य अध्यापकों एवं अध्यापक दोनों को सहायता प्रदान करना है जिससे सुगमता पूर्वक ज्ञान का स्थानान्तरण हो सके। शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्यों को हम निम्न प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं —

(1) शिक्षकों की सहायता करना :- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को इस तरह से प्रशिक्षित करने में मदद करता है कि वह अपने ज्ञान से छात्रों का सर्वांगीण विकास में आसानी से मदद कर सके। इसे निम्न प्रकार व्यक्त कर सकते हैं —

(i) शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को शैक्षिक समस्या के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण प्रदान करता है तथा उपयुक्त अध्यापन विधि से अवगत कराता है।

(ii) शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों में शैक्षिक समस्याओं के प्रति उचित मनोवृत्ति उत्पन्न करने में मदद करता है। इससे शिक्षण प्रक्रिया सरल हो जाती है और अर्जन में मदद मिलती है।

(iii) शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को छात्रों के व्यवहारों का निष्पक्ष मूल्यांकन में मदद करता है।

(iv) शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य छात्रों की कमजोरियों तथा असफलताओं को समझने तथा उसके निराकरण में मदद करना भी है।

(v) शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को अपनी भूमिका निर्वहन में मदद करता भी है।

(vi) शिक्षा मनोविज्ञान बालकों की Individual difference को ध्यान में रखकर Guidance Programme बनाने में भी मदद करता है।

(vii) शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों की कमजोरियों या सीमाओं को दूर करने में भी मदद करता है।

(viii) शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को बालकों की उपलब्धियों के मापने की उत्कृष्ट विधियों से भी अवगत कराता है।

(2) उचित शैक्षिक निर्देशन देना — प्रत्येक बालक की क्षमता अभिरुचि, अभिक्षमता अलग-अलग होती है। फलतः समुचित पाठ्यक्रम चयन आवश्यक हो जाता है। इसमें शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व बढ़ जाता है कि कौन छात्र कला, विज्ञान अथवा वाणिज्य पढ़े। उसके तहत निम्नलिखित आते हैं —

(i) उचित पाठ्यक्रम बनाना
(ii) उचित व्यवसायिक निर्देशन
(iii) उचित विधि से शिक्षा ग्रहण करना।

(iv) अभिभावकों को मार्गदर्शन भी करता है कि वे अपनी बात बच्चों पर न लादें। उसे अपनी अभिरुचि से बढ़ने दें।

(v) उचित पथ-प्रदर्शन करने वाली कार्यक्रमों की व्यवस्था करता।

(vi) शिक्षण संस्थान के प्रबंधकों को भी उचित मार्गदर्शन में मदद करता है।

(vii) अध्यापकों को उचित अध्यापन विधि से अवगत कराता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य बहुत ही व्यापक और समाजोपयोगी है जिसके द्वारा छात्रों की भविष्य सँवारने और प्रतिभा निखारने में काफी मदद मिल सकती है। इन उद्देश्यों की पूर्ति तभी संभव जब इसे सही अर्थों में अमलीजामा पहनाया जा सके। वस्तुतः शिक्षा मनोविज्ञान का मूल उद्देश्य "शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल, प्रभावी एवं वैज्ञानिक तथा बालकेन्द्रित बनाना है।"